Amire Ahle Sunnat Ka Pahla Safare Madina (Pahli Qist) (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 205
Weekly Booklet : 205

अमीरे अहले सुन्नत का पहला

सफ़रे मदीना (पहली क़िस्त)

सफ़हात 24

- हाज़िरिये मदीना की ख़ुश ख़बरी 08
- **अल्लाह** वालों के अन्दाज़ 11
- मदीनए पाक में नंगे पाउं रहना कैसा ? 07
- अमीरे अहले सुन्नत की सुनहरी जालियों पर हाज़िरी 07

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे मदीना**" मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

पेश लफ़्ज़

आ़शिक़ों की मे'राज मदीनए पाक की ह़ाज़िरी सो बार भी नसीब हो तो पहली ह़ाज़िरी की अपनी याद और लज़्ज़त होती है, 1980 में अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे मदीना हुवा, इस के कई यादगार लम्ह़ात व वाक़िआ़त मक़्बूले आ़म सिल्सिले मदनी मुज़ाकरे वग़ैरा में बयान होते रहते हैं, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! अब इस यादगार सफ़रे मदीना को तह़रीरी सूरत में मन्ज़रे आ़म पर लाने की सूरत बनी, जिस की पहली क़िस्त़ बनाम "अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे मदीना" है, **अल्लाह** पाक इख़्लास व इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए और इस यादगार सफ़रे मदीना की बक़िय्या क़िस्तें भी मन्ज़रे आ़म पर आ कर आ़शिक़ाने रसूल के क़ल्बो जिगर में आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत के इ़श्क़ो मह़ब्बत भरे वाक़िआ़त से ठन्डा करे । اَلْحَمْدُلِلّٰه ! 23 सफ़ह़ात के इस रिसाले के लिये कमो बेश 12 से ज़ाइद इस्लामी भाइयों से राबित़ा कर के वाक़िआ़त की तस्दीक़ात व तह़क़ीक़ के बा'द तह़रीर किया गया है, **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ है हमें अपने इस मक़्बूल बन्दे आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत के सदक़े मदीनए पाक की सच्ची मह़ब्बत नसीब फ़रमाए और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में ईमानो आ़फ़ियत के साथ शहादत, ख़ैर से जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मदीना इस लिये अ़त्त़ार जानो दिल से है प्यारा
कि रहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्त़ारी عُفِیَ عَنْهُ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

शो'बा : हफ़्तावार रिसाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे मदीना

दुआए जा नशीने अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़ह़ात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे मदीना"** पढ़ या सुन ले उसे बार बार ह़ज व ज़ियारते मदीना नसीब फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि मेरे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब भी कोई बन्दा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो एक फ़िरिश्ता उस दुरूद को ले कर ऊपर जाता है और **अल्लाह** पाक की बारगाह में पहुंचाता है। **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : इस दुरूद को मेरे बन्दे की क़ब्र में ले जाओ येह दुरूद अपने पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करता रहेगा और उस (बन्दए ख़ास) की आंखें इसे देख कर ठन्डी होती रहेंगी।"

(جمع الجوامع، 6/321، حدیث:19461)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आंसूओं का हार (ह़िकायत)

एक ख़ुश नसीब ज़ाइरे मदीना ने सफ़रे ह़ज से पहले अपने घर "मह़फ़िल" का एहतिमाम किया और अपने दोस्तों, रिश्तेदारों को शिर्कत की दा'वत दी। मह़फ़िल के आग़ाज़ में उन ह़ाजी साह़िब को रिशतेदारों

वग़ैरा ने फूलों के गजरे पहनाए, उस बा बरकत व पुरसोज़ महफ़िल में उन हाजी साहिब के एक बड़े आशिक़े रसूल दोस्त भी मौजूद थे। जूंही हाजी साहिब फूलों के गजरे पहने महफ़िल में हाज़िर हुए तो वोह दोस्त अपनी पलकों में अनमोल मोतियों का हार लिये बैठे थे, अपने हाजी दोस्त को फूलों के गजरे पहने देख कर अपनी पलकों में छुपे आंसूओं के समुन्दर को रोक न सके और बेक़ाबू हो कर बिलक बिलक कर रोने लगे, बन्द टूट गया और आंसूओं का धारा बह निकला। येह पुरकैफ़ मन्ज़र देख कर उस आशिक़े मदीना के दिल में हसरत बढ़ चली थी कि आह! मेरा दोस्त सफ़रे हज पर जा रहा है और मेरे पास हाज़िरिये मदीना के अस्बाब नहीं (काश! मैं भी हाज़िरिये मदीना की सआदत पाता...)

याद में आक़ा की आंसू बह गए सब मदीने को गए हम रह गए
हम मदीने जाएंगे अब के बरस हर बरस येह सोच कर हम रह गए

जब उन हाजी साहिब को हज के लिये रुख़्सत करने की घड़ी आई तो वोह मदीने का सच्चा आशिक़ अपने हाजी दोस्त को अल वदाअ करने के लिये भी गया, उस आशिक़े मदीना का कहना है : मैं बड़ी रश्क व आस (या'नी उम्मीद) भरी नज़रों से मदीने जाने वाले खुश नसीब आशिक़ाने रसूल को सफ़ीनए मदीना (या'नी बहरी जहाज़) में सूए मदीना जाते हुए देख रहा था। आह सद हज़ार आह! फिर मैं अपना बे क़रार दिल थामे वापस घर की तरफ़ चल पड़ा। सालों गुज़र जाने के बा वुजूद अब तक उन ज़ाइरीने मदीना की खुशियों का मन्ज़र मुझे याद है।

ज़ाइरे तयबा रौज़े पे जा कर तू सलाम उन से रो रो के कहना
मेरे ग़म का फ़साना सुना कर तू सलाम उन से रो रो के कहना

तेरी क़िस्मत पे रश्क आ रहा है तू मदीने को अब जा रहा है
आह ! जाता है मुझ को रुला कर तू सलाम उन से रो रो के कहना
जब पहुंच जाए तेरा सफ़ीना जब नज़र आए मीठा मदीना
बा अदब अपने सर को झुका कर तू सलाम उन से रो रो के कहना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपनी पलकों में आंसूओं का हार लिये, दिल में शम्ए इश्क़े रसूल जलाए, अपने क़ल्बो जिगर में आरज़ूए मदीना का चराग़ रोशन करने वाला वोह ह़क़ीक़ी आ़शिक़े मदीना जिस ने अपनी कोशिशों से लाखों लाख मुसल्मानों को मदीने का दीवाना बना दिया है, उस मर्दे क़लन्दर का नाम "**शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه" है।

ज़िक्रे मदीना जारी लब पर सोज़े मदीना बांटते अक्सर इश्क़े त़यबा में देखो तो लगते हैं सरशार
मेरे मुर्शिद हैं अ़त्तार मेरे मुर्शिद हैं अ़त्तार اِنْ شَآءَاللّٰه इन के सदक़े होगा बेड़ा पार

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वाह क्या बात है मदीने की

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰه ! उ़लमाए अहले सुन्नत तो होते ही आ़शिक़े रसूल हैं। रईसुत्तह़रीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه के ह़वाले से आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्ह़ूम रुक्न ह़ाजी ज़मज़म अ़त्तारी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने बयान फ़रमाया था : एक मरतबा अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी साह़िब एक मस्जिद में बयान के लिये तशरीफ़ लाए तो मेह़राब या उस के क़रीब दीवार पर लगे मक्तबतुल मदीना के स्टीकर "वाह क्या बात है

मदीने की'' पर नज़र पड़ी तो एक दम मदीनए पाक की महब्बत का ऐसा ग़लबा हुवा कि आंखों से बे इख़्तियार आंसू बहने लगे फिर इसी पुरसोज़ अन्दाज़ में फ़रमाया कि जिस की तहरीर में ऐसा असर है तो उस शख़्स में कैसा सोज़ होगा।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शाह तुम ने मदीना अपनाया, वाह क्या बात है मदीने की
अपना रौज़ा इसी में बनवाया, वाह क्या बात है मदीने की

सफ़रे ह़ज

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सफ़रे ह़ज व ज़ियारते मदीना बड़ा कैफ़ो सुरूर वाला सफ़र है, **अल्लाह** पाक तमाम आ़शिक़ाने रसूल को अपना प्यारा प्यारा ह़रम, का'बा शरीफ़, मिना, अ़रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा शरीफ़ और का'बे के का'बे सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के जल्वों से मुशर्रफ़ फ़रमाए। यक़ीन मानिये ! येह सफ़र जितनी बार नसीब हो ''कम'' है, **अल्लाह** पाक ने अपने पाक घर ख़ानए का'बा में ऐसी कशिश रखी है कि यहां से लौटने को जी नहीं चाहता, वक़्ते रुख़्सत गोया ऐसा लगता है जैसे बच्चा मां की गोद से छीना जा रहा हो और मदीना तो मदीना है, मदीने की तो क्या ही बात है कौन सी आंख इस के दीदार में बहती नहीं, कौन सा दिल इस की याद में तड़पता नहीं, किस मुसल्मान के दिल में ह़ाज़िरिये मदीना की तमन्ना नहीं। काश सद करोड़ काश ! बार बार ख़ैर से ह़ाज़िरी नसीब हो।

वोह मदीना जो कौनैन का ताज है जिस का दीदार मोमिन की मे'राज है
ज़िन्दगी में ख़ुदा हर मुसल्मान को वोह मदीना दिखा दे तो क्या बात है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी त़रफ़ दिल के मैलान को ''मह़ब्बत'' कहते हैं और अगर येह मह़ब्बत शिद्दत पकड़ ले तो इसे ''इ़श्क़'' कहते हैं, जिस से इ़श्क़ हो जाता है तो उस की हर शै अच्छी लगती है।

जान है इ़श्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं

आ़शिक़े मदीना

ऐ आ़शिक़ाने अ़त्त़ार ! बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने लाखों मुसल्मानों को मदीनए पाक की मह़ब्बत और शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़श्क़ का जाम पिलाया है, आप वाक़ेई आ़शिक़े मदीना और ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रसूल हैं बल्कि **अल्लाह** पाक ने आप को वोह मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया है कि बड़े बड़े उ़लमाए किराम भी आप को आ़शिक़े मदीना और सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर कहते हैं। आप के दिल में अमीरे अहले सुन्नत की मह़ब्बत मज़ीद बढ़ाने के लिये 2 उ़लमाए किराम के तअस्सुरात अपने अल्फ़ाज़ में पेश करता हूं : हिन्द के मश्हूर आ़लिमे दीन, शहज़ादए ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ग़ाज़िये मिल्लत ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद हाशिमी मियां अश्रफ़ी जीलानी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی फ़रमाते हैं : मेरा इल्यास क़ादिरी साह़िब से कोई (ख़ूनी) रिश्ता नहीं है, जिस मदीने को छोड़ कर हमारे आबाओ अज्दाद हिन्दूस्तान में इस्लाम फैलाने तशरीफ़ लाए ''मैं ने वोह पूरा मदीना इल्यास क़ादिरी के सीने में देखा है।'' वोह मदीना मदीना करते रहते हैं, बक़ीअ़ में लेटना चाहते हैं, सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के क़दमों में रहना चाहते हैं, (उन का) इ़श्क़े रसूल, तमन्नाए मदीना, मह़ब्बत में डूबा हुवा एक मिज़ाज है। मैं दुआ़ गो हूं कि मौलाना इल्यास क़ादिरी

साहिब के इल्मो उम्र में बरकत अ़ता हो और अहले सुन्नत व जमाअ़त को फ़ैज़ाने सुन्नत से फ़ैज़याब होने का शरफ़ अ़ता हो। (वीडियो क्लिप और अमीरे अहले सुन्नत के बारे में 1163 उ़लमाए किराम के तअस्सुरात, स. 738 ग़ैर मत़्बूआ़)

रब के डर से वोह रोना रुलाना तेरा वज्द में ज़िक्रे त़यबा पे आना तेरा
जामे इ़श्क़े नबी वोह पिलाना तेरा मेरे साक़ी का शरबत सलामत रहे

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद इब्राहीम क़ादिरी साहिब مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ह़ज़रत अमीरे अहले सुन्नत का भला करे, जिन्हों ने दा'वते इस्लामी के नाम से ऐसी दीनी इस्लाही जमाअ़त क़ाइम फ़रमाई, जिस से हज़ारों लाखों अफ़राद वाबस्ता हो कर अपनी ज़िन्दगी इत्तिबाए़ शरीअ़त में गुज़ार कर और दिलों को हुब्बे सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सरशार कर के अपने सीने को मदीना बनाए हुए हैं। (अमीरे अहले सुन्नत के बारे में 1163 उ़लमाए किराम के तअस्सुरात, स. 30 ग़ैर मत़्बूआ़)

इ़श्क़े नबी मिला है दिल फूल सा खिला है मस्लक मेरे रज़ा का अ़त्तार ने दिया है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आ़शिक़ों की ईद

ऐ सब्ज़ गुम्बद देखने की आरज़ू रखने वालो ! किसी ने सच कहा है कि मदीने जाने के लिये पैसों की नहीं "सच्ची तड़प" की ज़रूरत है, जब बन्दा ह़ाज़िरिये मदीना के लिये बे क़रार हो जाता है तो ह़ाज़िरी के रस्ते ख़ुद बनते चले जाते हैं, बड़े बड़े मालदार, पैसे वाले लोग देखते रह जाते हैं और ह़क़ीक़ी दीवानए मदीना अपने आक़ाए मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दर पर ह़ाज़िर हो जाता है।

कहां का मन्सब कहां की दौलत, क़सम ख़ुदा की है येह ह़क़ीक़त
जिन्हें बुलाया है मुस्त़फ़ा ने, वोही मदीने को जा रहे हैं

ऐसा ही कुछ आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ हुवा। आप को बचपन ही से ना'त ख़्वानी और ह़ाज़िरिये मदीना के कलाम पढ़ने, सुनने का शौक़ था। दा'वते इस्लामी से पहले भी आप अपने दोस्तों के साथ मिल कर ज़िक्रे मदीना और ज़िक्रे शाहे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़फ़िलें सजाते थे। बिल ख़ुसूस मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का यादे मदीना में डूबा हुवा कलाम :

बख़्ते ख़ुफ़्ता ने मुझे रौज़े पे जाने न दिया चश्मो दिल सीने कलेजे से लगाने न दिया

लाइट्स बन्द कर के पढ़ते, मह़फ़िल में मौजूद आ़शिक़ाने रसूल पर ख़ूब रिक़्क़त त़ारी होती और बड़ा पुरकैफ़ मन्ज़र होता, बिल आख़िर वोह सुहानी घड़ी तशरीफ़ ले ही आई, 1400 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1980 ईसवी की बात है कि अमीरे अहले सुन्नत के बा'ज़ दोस्त जो अ़रब शरीफ़ में रहते थे, उन्हें अमीरे अहले सुन्नत की क़ल्बी कैफ़िय्यात का कुछ अन्दाज़ा था, उन्हों ने मिल कर अमीरे अहले सुन्नत को अपने ख़र्च पर ह़ाज़िरिये मदीना की ख़ुश ख़बरी सुनाई।

इस आस पे जीता हूं कह दे येह कोई आ कर चल तुझ को मदीने में सरकार बुलाते हैं

ह़ाज़िरिये मदीना की ख़ुश ख़बरी

हुवा कुछ यूं कि अमीरे अहले सुन्नत के बचपन के एक दोस्त 1973 ईसवी में मदीनए पाक शिफ़्ट हो गए थे, कुछ अ़र्से बा'द मज़ीद चन्द दोस्त भी ह़रमैने त़य्यिबैन ह़ाज़िर हो गए, एक मरतबा आपस में बैठे दोस्तों में सब से पहले मदीनए पाक ह़ाज़िर होने वाले दोस्त ने सब से कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम सब ने मदीनए पाक की ज़ियारत कर ली है लेकिन हमारे एक

दोस्त अब तक मदीनए पाक ह़ाज़िर नहीं हो सके क्या ही अच्छा हो कि हम सब मिल कर उन के आने जाने की टिकट का इन्तिज़ाम करें, मेरा घर मदीनए पाक में ह़रमे पाक के क़रीब है (मस्जिदे नबवी शरीफ़ की तौसीअ़ के बा'द अब वोह मकान भी मस्जिद शरीफ़ में शामिल हो गया है) जब अमीरे अहले सुन्नत मदीनए पाक आएंगे तो उन का क़ियाम मेरे घर पर हो जाए और मक्कए पाक में ह़ाज़िरी के दौरान मक्के में रहने वाले दोस्त के हां क़ियाम हो जाए, यूं सिर्फ़ आने जाने की टिकट का हमें इन्तिज़ाम करना होगा, उस वक़्त मुल्क से मदीने शरीफ़ के टिकट का ख़र्च 5 हज़ार रियाल था। सब दोस्तों ने आपस में रक़म मिलाई और यूं अमीरे अहले सुन्नत की ह़ाज़िरिये मदीना की सूरत बनी।

जब बुलाया आक़ा ने ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

ह़ैरत अंगेज़ मुआ़मला

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आ़शिक़े ज़ार पर करम फ़रमा दिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! ब ख़ैरो आ़फ़ियत उ़म्रे का वीज़ा मिल गया। मदीनए पाक की ह़ाज़िरी की ख़ुश ख़बरी क्या थी गोया अनमोल ने'मत का ह़ुसूल था। अ़त्तार ख़ुशी से फूले न समाते थे, ख़ुशी ख़ुशी एक ट्रेवल एजन्ट मुह़म्मद सलीम जो आप के पास नूर मस्जिद में आते जाते थे उन को टिकट बुक करने का फ़रमाया। उन्हों ने जिस एयर लाइन में टिकट बुक की, अमीरे अहले सुन्नत उस में सफ़र नहीं करना चाहते थे, **अल्लाह** पाक की रह़मत से काफ़ी कोशिश के बा'द मेह़नत रंग ले आई और जिस फ़्लाइट की तमन्ना थी वोह भी पूरी हुई और टिकट बुक हो गई। **अल्लाह** का करना देखिये ! कि जिस

दिन जिस वक़्त अमीरे अहले सुन्नत की फ़्लाइट उड़ी, उस से कुछ ही देर क़ब्ल वोह एयर लाइन भी रवाना हुई जिस में इस से पहले अमीरे अहले सुन्नत की टिकट बुक हुई थी, जद्दा शरीफ़ पहुंच कर इत्तिलाअ़ मिली कि उस एयर लाइन में आग लगने से तमाम मुसाफ़िर फ़ौत हो गए। **अल्लाह** करीम ! उस ह़ादिसे में फ़ौत होने वाले आ़शिक़ाने रसूल की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए। (गोया अमीरे अहले सुन्नत मदीनए पाक की ह़ाज़िरी के लिये ही बुलाए गए थे।)

जिसे चाहा दर पे बुला लिया जिसे चाहा अपना बना लिया
येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

तश्वीश दूर कीजिये

अमीरे अहले सुन्नत के बा'ज़ दोस्तों को जब उस जहाज़ के ह़ादिसे का पता चला तो वोह समझे कि अमीरे अहले सुन्नत उसी फ़्लाइट में थे लिहाज़ा वोह ता'ज़ियत के लिये आप के घर आए, जब अमीरे अहले सुन्नत को इस मुआ़मले की किसी त़रह़ ख़बर पहुंची तो आप ने अपने दोस्त के ज़रीए येह ख़बर भिजवाई कि اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मैं ब ख़ैरो आ़फ़ियत जद्दा शरीफ़ में हूं।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां येह अ़र्ज़ करता चलूं कि जब कभी सफ़र करें तो ख़ैरिय्यत से अपनी मत़लूबा मन्ज़िल पर पहुंच कर अपने घर इत्तिलाअ़ कर देनी चाहिये ताकि वालिदैन व दीगर अ़ज़ीज़ों को किसी क़िस्म की तश्वीश न हो वरना मुम्किन है कि किसी वज्ह से वोह आप से राबित़ा कर रहे हों और राबित़ा न होने की सूरत में तश्वीश में मुब्तला हों। **अल्लाह** पाक हमें ईमानो आ़फ़ियत से सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के

साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह वालों के अन्दाज़

ग़ालिबन 5 शव्वालुल मुकर्रम 1400 हि. की मुबारक घड़ी अमीरे अहले सुन्नत जद्दा शरीफ़ एयरपोर्ट पर उतरे तो आप को पता चला कि आप का लगेज (Luggage) गुम हो गया है, बड़ी तलाश के बा'द भी जब बेग न मिला तो आप येह सोच कर कि "जान के बदले बेग चला गया" बक़िय्या सामान (Hand carry) ले कर कस्टम रूम से बाहर तशरीफ़ ले आए और जो दोस्त लेने आए थे उन के साथ गाड़ी में बैठ गए।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के हर फ़ैसले पर राज़ी रहना चाहिये, फ़ुज़ूल शिक्वा शिकायत करने का कोई फ़ाएदा नहीं बल्कि हो सकता है मुसीबत पर मिलने वाले अज्र से मह़रूमी हो जाए, अमीरे अहले सुन्नत की प्यारी प्यारी सोच पर क़ुरबान ! आप **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दों में से हैं, दूसरे वत़न में पहुंचते ही सामान खो जाना कितनी बड़ी परेशानी का सबब है येह वोही जान सकता है जिस के साथ कभी ऐसा हुवा हो, आप ने इतनी बड़ी परेशानी के बा वुजूद शिक्वा व शिकायत नहीं की और येही हमारे बुज़ुर्गों का त़रीक़ा है। बहुत बड़े वलिय्युल्लाह ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि चोर मेरे घर में दाख़िल हो कर तमाम माल चुरा कर ले गया है। येह सुन कर आप ने बड़े ह़िक्मत भरे अन्दाज़ में इर्शाद फ़रमाया : येह मक़ामे शुक्र है कि चोर आया और माल चुरा कर ले गया, अगर शैत़ान चोर

बन कर आता और مَعَاذَاللہ तुम्हारा ईमान चुरा कर ले जाता तो फिर क्या करते ? **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** आमीन

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अपने दिल मे ह़ाज़िरिये मदीना की तड़प रखने वालो ! ज़रा तसव्वुर तो कीजिये कि वोह वक़्त कैसा सुहाना होगा जब हम ऐसी गाड़ी पर सुवार हों जो मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ रवां दवां हो और हमें मा'लूम हो कि कुछ देर बा'द हम वाक़ेई सचमुच मदीनए पाक में दाख़िल हो जाएंगे, वोह सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के जल्वे, वोह मस्जिदे नबवी शरीफ़ के पुर रौनक़ मीनार, वोह ह़रमे मदीना, वोह सुनह्री जालियां और रियाज़ुल जन्नह[1] का ह़सीन व दिलकश मन्ज़र..... आह ! काश ।.....

मैं फूल को चूमूंगा और धूल को चूमूंगा जिस वक़्त करूंगा मैं दीदार मदीने का
आंखों से लगा लूंगा और दिल में बसा लूंगा सीने में उतारूंगा मैं ख़ार मदीने का

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़क़ीक़ी आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत अपने वत़न से मदीनए मुनव्वरह के इरादे से चले थे यूं ह़ालते एह़राम में नहीं थे क्यूं कि जो मक्कए पाक के इरादे से मीक़ात में दाख़िल होता है उस के लिये एह़राम बांधना ज़रूरी होता है । (रफ़ीकुल ह़रमैन, स. 327 मफ़्हूमन) अमीरे अहले सुन्नत की गाड़ी जद्दा शरीफ़ से सूए मदीना झूमती हुई रवाना हुई । येह ऐसा ख़ूब सूरत और मुन्फ़रिद सफ़र था कि इस को कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी जिस त़रह़ इस का ह़क़ है) तह़रीर में लाना क़रीब ब ना मुम्किन है क्यूं

1..... अ़वाम में "रियाज़ुल जन्नह" मश्हूर है लेकिन दुरुस्त "रौज़तुल जन्नह" है ।

कि ह़क़ीक़ी दीवानए मदीना के दिल की कैफ़िय्यात को अल्फ़ाज़ में कैसे समोया जा सकता है, अलबत्ता अपने अन्दाज़ में सफ़रे मदीना का ह़ाल पेश करने की कोशिश की जा रही है। उन दिनों अ़रब शरीफ़ में बड़ी गरमी थी गोया सूरज भी फ़ज़ाए अ़रब की ख़ूब बरकतें ले रहा था। अमीरे अहले सुन्नत जिस कार में सुवार थे वोह एयर कन्डीशन्ड थी और बाहर सख़्त लू चल रही थी लेकिन ह़क़ीक़ी दीवानए मदीना के दिल की कैफ़िय्यात बयान से बाहर थीं, एयर कन्डीशन्ड कार में बैठने के बा वुजूद आप बार बार कार का शीशा खोल कर सह़राए अ़रब की फ़ज़ा से लुत्फ़ अन्दोज़ होते। आ़शिक़ों के दियारे मह़बूब से इस त़रह़ के आ़शिक़ाना अन्दाज़ कोई नई बात नहीं। कूचए मह़बूब के ज़र्रे ज़र्रे से उल्फ़तो मह़ब्बत होती है।

आ इधर रूह़ की हर तह में समो लूं तुझ को ऐ हवा तू ने तो सरकार को देखा होगा

बहर ह़ाल गाड़ी सूए मदीना जा रही है और ना'त शरीफ़ चल रही है, चूंकि ज़िन्दगी का पहला सफ़र था कभी ख़ुशी और कभी दिल में हैबत सी होगी क्यूं कि अ़न्क़रीब आ़शिक़ों की बस्ती मदीनए पाक में ह़ाज़िरी है, किस बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िरी का क़स्द है, बहर ह़ाल दीवानगी के भी अपने अन्दाज़ होते हैं हमें कभी भी किसी की दीवानगी पर ए'तिराज़ और बुरे ख़याल को दिल में नहीं लाना चाहिये, वरना कहीं ऐसा न हो कि हम इस अ़ज़ीम दौलत से मह़रूम रहें।

न किसी के रक़्स पे त़न्ज़ कर न किसी के ग़म का मज़ाक़ उड़ा
जिसे चाहे जैसे नवाज़ दे येह मिज़ाजे इ़श्क़े रसूल है

मदीने की शानो अ़ज़मत के क्या कहने !

येह उल्फ़तो मह़ब्बत का ह़सीन अन्दाज़ किसी मा'मूली शह़र या मा'मूली जगह से नहीं बल्कि येह उस शहरे मदीना से प्यार का इज़्हार है जो

सब शहरों का बादशाह और यहां तशरीफ़ फ़रमा होने वाले सारे नबियों के शहन्शाह हैं।

नबियों में जैसे अफ़्ज़लो आ'ला हैं मुस्तफ़ा शहरों में बादशाह है मदीना हुज़ूर का

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से मदीने की 5 ख़ुसूसिय्यात

(यूं तो मदीने में बे शुमार ख़ूबियां हैं मगर हुसूले बरकत के लिये यहां सिर्फ़ 5 बयान की हैं)

(1) रूए ज़मीन का कोई ऐसा शहर नहीं जिस के मुबारक नाम इतने हों, जितने मदीनए पाक के नाम हैं, बा'ज़ उलमा ने 100 तक नाम लिखे हैं। (2) मदीने शरीफ़ में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक दिल सुकून पाता (3) यहां का गर्दो गुबार अपने चेहरए अन्वर से साफ़ न फ़रमाते और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को भी इस से मन्अ फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते कि ख़ाके मदीना में शिफ़ा है। (جذب القلوب، ص22) (4) जब कोई मुसल्मान ज़ियारत की निय्यत से मदीने शरीफ़ में आता है तो फ़िरिश्ते रह़मत के तोह़फ़ों से उस का इस्तिक़्बाल करते हैं। (جذب القلوب، ص211) (5) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीने में मरने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई और यहां मरने वाले की आप शफ़ाअत फ़रमाएंगे।

(आशिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 261)

मदीना मदीना हमारा मदीना हमें जानो दिल से है प्यारा मदीना
सुहाना सुहाना दिलआरा मदीना दिवानों की आंखों का तारा मदीना
येह रंगीं फ़ज़ाएं येह महकी हवाएं मुअत्तर मुअम्बर है सारा मदीना
वहां प्यारा का'बा यहां सब्ज़ गुम्बद वोह मक्का भी मीठा तो प्यारा मदीना
ज़िया पीरो मुर्शिद के सदक़े में आक़ा येह अत्तार आए दोबारा मदीना

मदीना आने वाला है

मदीने के दीवानो ! ज़रा दिल थाम कर पढ़िये ! क्यूं कि अब वोह घड़ी आया ही चाहती है, जब ह़क़ीक़ी आ़शिक़े मदीना सचमुच मदीनए मुनव्वरह जैसे ह़सीनो दिलकश शह्र में दाख़िल होने लगा, इस से पहले कि अमीरे अहले सुन्नत की गाड़ी मदीनए पाक की नूरबार ह़ुदूद में दाख़िल हो, आप ने गाड़ी चलाने वाले अपने दोस्त से फ़रमाया कि मैं गाड़ी में बैठे बैठे शहरे मदीना में दाख़िल नहीं होना चाहता लिहाज़ा जब मदीनए पाक में दाख़िले का वक़्त आ जाए तो मुझे पहले बता देना। शायद ख़ैर ख़्वाही व हमदर्दी की बिना पर येह सोचते हुए कि आप किस त़रह़ पैदल इस गरमी के आ़लम में मस्जिदे नबवी शरीफ़ पहुंचेंगे, उस दोस्त ने आप को मस्जिदे नबवी शरीफ़ के पास आ कर बताया :

''येह लीजिये आ गया मदीना'' और ''येह रहा सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद''

क्या सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद का ख़ूब है नज़ारा है किस क़दर सुहाना कैसा है प्यारा प्यारा

अन्वार यां छमाछम बरसाएं अब्र पैहम पुरनूर सब्ज़ गुम्बद पुरनूर हर मनारा

मरह़बा सद मरह़बा ! सामने सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद जगमगाता नूर बरसाता चमक रहा था, येह सुनना था कि दीवानए मदीना वारफ़्तगी व शौक़ में झूमता हुवा येह कहता हुवा गाड़ी से उतरा कि मेरा सामान आप संभालें मैं तो जिन के लिये आया हूं उन के पास जा रहा हूं। अमीरे अहले सुन्नत कैफ़ो सुरूर के आ़लम में बिग़ैर चप्पल ही गाड़ी से नीचे तशरीफ़ लाए, उतरने को तो उतर गए लेकिन मदीनए पाक में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद से सूरज भी ख़ूब फ़ैज़ान ले रहा था, गरमी और लू शरीफ़ की ऐसी ह़ाज़िरी थी कि गोया ख़ाके मदीना पर कोई चल कर तो दिखाए, जैसे ही आप ने

ज़मीन पर पाउं रखा तो तपिश की शिद्दत पिंडलियों से ऊपर तक महसूस हो रही थी। ज़मीन पर पाउं रखना दुश्वार था, ज़िन्दगी में कभी ऐसी तपती ज़मीन न देखी थी, बिल आख़िर आप ने अपने गले से सफ़ेद रंग का रूमाल उतारा और उस को ज़मीन पर बिछा लिया चन्द क़दम उस पर चलते और फिर रुक जाते।

वारूं क़दम क़दम पे कि हर दम है जाने नौ येह राहे जां फ़िज़ा मेरे मौला के दर की है

अल्लाहु अक्बर ! अपने क़दम और येह ख़ाके पाक हसरत मलाएका को जहां वज़्ए सर की है

मदीनए पाक में नंगे पाउं रहना कैसा ?

मदीने के दीवानो ! आशिक़े मदीना की अपने आक़ा व मौला की बारगाह में हाज़िरी का येह तसव्वुराती मन्ज़र बड़ा ज़ौक़ अफ़्ज़ा है कि आक़ा की मुबारक गलियों में चप्पल भी नहीं पहननी, हो सकता है किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा आए कि सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان भी तो आशिक़े रसूल थे मगर वोह तो मदीने में चप्पल पहनते थे हम उन से बढ़ कर आशिक़े रसूल तो नहीं हो सकते। तो अ़र्ज़ येह है कि वाक़ेई हम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से बढ़ कर आशिक़े रसूल नहीं हो सकते लेकिन अगर कोई मदीनए पाक की महब्बतो ता'ज़ीम में चप्पल नहीं पहनता तो शरीअ़त में इस से मन्अ़ भी नहीं किया गया बल्कि येह इस बा बरकत मक़ाम का अदब है और मुबारक मक़ाम पर पाउं से जूते उतारने का सुबूत तो क़ुरआने करीम में मौजूद है जैसा कि पारह 16 **सूरए ताहा** आयत नम्बर 12 में है :

فَاخۡلَعۡ نَعۡلَيۡكَ ۚ اِنَّكَ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल, बेशक तू पाक जंगल तुवा में है।

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ तफ़्सीरे कुरआन नूरुल इ़रफ़ान में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : अदब के लिये जूता उतारना "सुन्नते नबवी" है। (नूरुल इ़रफ़ान, स. 498)

पाउं में जूता, अरे ! मह़बूब का कूचा है येह होश कर तू होश कर, ग़ाफ़िल ! मदीना आ गया

मदीने में नंगे पाउं

करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रत इमामे मालिक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल थे, आप मदीनए पाक की गलियों में नंगे पैर चला करते थे। (طبقات کبریٰ للشعرانی، الجزء الاول، ص76) आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते थे : कोई रात ऐसी नहीं गुज़री जिस में मुझे **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न हुई हो। (حلیۃ الاولیاء، 6/346)

दीवाने को तह़क़ीर से दीवाना न कहना दीवाना बहुत सोच के दीवाना बना है

मस्ते मए उल्फ़त है मदहोशे मह़ब्बत है

फ़रज़ाना है दीवाना, दीवाना है फ़रज़ाना

अल्फ़ाज़ मआ़नी : मस्त : गुम। **मए उल्फ़त :** मह़ब्बत की शराब। **फ़रज़ाना :** अ़क़्ल मन्द।

कहां वादिये तुवा कहां शहरे मदीना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुल्के शाम में तूर पहाड़ के क़रीब वाक़ेअ़ पाक जंगल तुवा इस लिये मुक़द्दस व बा बरकत जगह थी कि वोह अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام के गुज़रने का मक़ाम था, अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام की गुज़र गाह का जब येह मक़ाम है तो जहां सारे नबियों के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कमो बेश 10 साल तक ज़ाहिरी ह़यात के साथ

तशरीफ़ फ़रमा रहे और अब भी अपने मुबारक जिस्म के साथ वहीं तशरीफ़ फ़रमा हैं इस मक़ाम की शानो अ़ज़मत का क्या कहना, वादिये तुवा अम्बियाए किराम की गुज़र गाह जब कि सारी काएनात का नगीना "मदीना" नबिय्युल अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिहाइश गाह, एक रिवायत के मुताबिक़ वादिये तुवा में बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मज़ाराते मुबारका भी हैं जब कि मदीने में सारे नबियों के सरदार आराम फ़रमा हैं, वादिये तुवा में कलीमुल्लाह से ख़िताब होता है और मदीनए त़य्यिबा में ह़बीबुल्लाह से, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام वादिये तुवा तशरीफ़ लाए जब कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदीनए पाक हिजरत का हुक्म दिया गया, अल ग़रज़ मदीनए पाक की अ़ज़मतो शान बयान करना हमारे बस का काम नहीं, शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

बना शह नशीं ख़ुसरवे दो जहां का बयां क्या हो इ़ज़्ज़ो वक़ारे मदीना
शरफ़ जिन से ह़ासिल हुवा अम्बिया को वोही हैं ह़सन इ़फ़्तिख़ारे मदीना

आ़शिक़ों के इमाम, अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

ह़श्त ख़ुल्द आएं वहां कस्बे लत़ाफ़त को रज़ा चार दिन बरसे जहां अब्रे बहाराने अ़रब

अल्फ़ाज़ मआ़नी : ह़श्त : आठ। **ख़ुल्द :** जन्नत। **कस्बे लत़ाफ़त :** तरो ताज़गी लेना। **अब्र :** बादल। **बहाराने अ़रब :** अ़रब की बहारें। (एक और शाइ़र ने बड़ी प्यारी बात कही है :)

जब से क़दम पड़े हैं रिसालत मआब के जन्नत बना हुवा है मदीना हुज़ूर का
कुदसी भी चूमते हैं अदब से यहां की ख़ाक क़िस्मत पे झूमता है मदीना हुज़ूर का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत की सुनहरी जालियों पर ह़ाज़िरी

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मदीने की धूप शरीफ़ की इसी ज़ोरदार ह़ाज़िरी के साथ आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में दाख़िल हुए, जद्दा शरीफ़ से मदीनए पाक ह़ाज़िरी के दौरान, गाड़ी में मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कलाम का येह शे'र ढारस बंधा रहा था :

थे पाउं में बेख़ुद के छाले तो चला सर से हुशियार है दीवाना हुशियार है दीवाना

ऐ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दीदार की तड़प रखने वालो ! ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! एक आ़म मुसल्मान भी जब पहली बार ह़ाज़िरिये मदीना की सआ़दत पाता है तो ख़ूब ख़ुशियां मनाता है, फिर जब उस बन्दए मोमिन की मे'राज का वक़्त आ पहुंचे और वोह उस हरियाले सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद तले जिसे सारी ज़िन्दगी तस्वीरों में देखा, ना'तों में सुना, ख़ुश नसीबों ने ख़्वाब की वादियों में चूमा होता है वोह ऐ़न जागते में, सामने अपने जल्वे लुटा रहा हो तो क्या ह़सीन मन्ज़र होता होगा, سُبْحٰنَ اللهِ ! क्या पुर लुत्फ़ वोह मन्ज़र होगा जब ह़क़ीक़ी आ़शिक़े मदीना ने उस सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद और नूरबार मीनार का दीदार किया होगा उस वक़्त क़ल्बो जिगर की क्या कैफ़िय्यात होंगी, क्या आंसूओं की क़ित़ारें, आहों और सिस्कियों की पुकार हुई होगी.....

पेशे नज़र वोह नौ बहार सज्दे को दिल है बे क़रार रोकिये सर को रोकिये हां येही इम्तिह़ान है

जिन आ़शिक़ाने रसूल ने आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत के ज़रीए सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया था उन का सलाम और दिल ही दिल में न जाने क्या क्या अ़र्ज़े ह़ाल बयान

किया होगा, ज़िन्दगी में पहली बार सुनहरी जालियों पर हाज़िरी वोह भी इस दीवानगी की कैफ़िय्यत में, मरहबा सद मरहबा !

हाले दिल बयां करने के बा'द आप वापस मुड़े तो वोही दोस्त जो आप को जद्दा शरीफ़ से लाए थे मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मौजूद थे फिर आप वापस अपनी क़ियाम गाह जो कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ से क़रीब ही थी वहां तशरीफ़ लाए, वापस आ कर जो आप के आंसूओं का बन्द टूटा तो वोह जल्द रुक न सका, हर आशिक़े रसूल की पहली हाज़िरिये मदीना की कुछ न कुछ ख़ास कैफ़िय्यात होती हैं, किसी ने ख़ुशी ख़ुशी दीदार की ख़ुश ख़बरी पाई तो कोई रोता हुवा आया और रोता ही रहा, दीवानगिये मदीना का हर वोह अन्दाज़ जो शरीअ़त से न टकराता हो वोह इख़्तियार किया जा सकता है और येह सआ़दत की बात है। **अल्लाह** करीम हमें अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़ों के सदक़े इ़श्क़े मदीना व इ़श्क़े शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल ने'मत अ़ता फ़रमाए।

है येह फ़ज़्ले ख़ुदा, मैं मदीने में हूं है उसी की अ़ता मैं मदीने में हूं
या रसूले ख़ुदा मैं मदीने में हूं तुम ने बुलवा लिया मैं मदीने में हूं
मेरी ईद आज है मेरी मे'राज है मैं यहां आ गया मैं मदीने में हूं

महबूब को मनाने के निराले अन्दाज़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ों के अन्दाज़ ही निराले होते हैं। किसी ने (वक़्त के अ़ज़ीमुश्शान बादशाह) महमूद ग़ज़्नवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को हाज़िरिये मदीनए मुनव्वरह के दौरान मस्जिदे नबवी शरीफ़ में फ़क़ीराना

लिबास पहने, कन्धे पर मश्कीज़ा उठाए ज़ाइरीने ह़रम को पानी पिलाते देख कर कहा : क्या आप ग़ज़्नी के शहन्शाह नहीं ? येह क्या ह़ाल बना रखा है ! जवाब दिया : मैं शहन्शाह हूं मगर ग़ज़्नी में, इस दरबार में तो शहन्शाह भी फ़क़ीर व गदा होते हैं। पूछने वाले को येह दीवानगी भरा जवाब बहुत ही प्यारा लगा। कुछ देर बा'द उस ने देखा कि मिस्र का शहन्शाह शाही कर्रो फ़र और रो'ब दाब के साथ चला आ रहा है, उस शख़्स ने बढ़ कर कहा : आप ने इतनी बड़ी जसारत की ! मदीनए पाक की ह़ाज़िरी और येह शाही दबदबा ! जो जवाब मिस्री शहन्शाह ने दिया वोह भी सुनह्री ह़ुरूफ़ से लिखने के क़ाबिल है। शाहे मिस्र बोला : ऐ सुवाल करने वाले ! येह बताओ येह बादशाही किस हस्ती ने अ़त़ा की ? यक़ीनन मदीने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ही इनायत फ़रमाई है। लिहाज़ा शाही ताज व लिबास के साथ ह़ाज़िर हुवा हूं ताकि देने वाला अपनी मुबारक आंखों से देख ले।

(आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 51)

जिस दम सूए त़यबा सफ़र हो आंखें तर हों फटता जिगर हो
और अ़त़ा हो सोज़िशे सीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे
सामने जब हो गुम्बदे ख़ज़रा क़ल्बो जिगर हों पारा पारा
बह निकले अश्कों का धारा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आ़शिक़े मदीना की मदीने से बा कमाल मह़ब्बत !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रिवायत में है : مَنْ اَحَبَّ شَيْئًا اَكْثَرَ ذِكْرَهٗ या'नी इन्सान जिस चीज़ से मह़ब्बत करता है उस का ज़िक्र कसरत से करता है। (شعب الایمان، 1/388، حدیث: 501) येही वज्ह है कि

अमीरे अहले सुन्नत के फ़ैज़ान से दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल ज़िक्रे मदीना करते ही रहते हैं, अमीरे अहले सुन्नत की मदीनए पाक से मह़ब्बत की मिसाल इस ज़माने में मिलना दुश्वार है, आप ने बच्चों की ज़बान पर भी ज़िक्रे मदीना जारी कर दिया है, आप की दिन रात की मुसल्सल कोशिशों से बनाई गई दुन्याए इस्लाम की सब से बड़ी इस्लाही और दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी इस वक़्त दुन्या के कई ममालिक में आ़शिक़ाने रसूल के सीनों में शम्ए़ इ़श्क़े रसूल जलाने और सुन्नतें आ़म करने में मसरूफ़े अ़मल है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! येह दीनी तह़रीक कमो बेश 80 शो'बों के ज़रीए़ क़ुरआनो सुन्नत का पैग़ाम आ़म कर रही है, आइये ! अब आप को इस आ़शिक़े मदीना अमीरे अहले सुन्नत की मह़ब्बते मदीना से रचे बसे हुए अन्दाज़ से चन्द ऐसे शो'बों के नाम बयान करूं जिन के नाम ही में ज़िक्रे मदीना और यादे मदीना का ख़ूब इज़्हार है। इस्लामी लिट्रेचर लिखने वाले शो'बे का नाम "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या", मदनी मराकिज़ मसाजिद का नाम "फ़ैज़ाने मदीना", दर्से निज़ामी आ़लिम कोर्स करवाने वाले मदारिस का नाम "जामिअ़तुल मदीना", क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा मुफ़्त करवाने वाले मदारिस का नाम "मद्रसतुल मदीना", उर्दू समेत कमो बेश 30 से ज़ाइद ज़बानों में इस्लामी किताबें प्रिन्ट कर के दुन्या भर में दीन का पैग़ाम आ़म करने वाले इदारे का नाम "मक्तबतुल मदीना", बच्चों को दीन के साथ साथ दुन्या की ता'लीम देने वाले स्कूल का नाम "दारुल मदीना" और दीनी व दुन्यावी मा'लूमात से मालामाल इ़ल्मे दीन

सीखने का ला जवाब व बे मिसाल सुवाल व जवाब का सिल्सिला ''मदनी मुज़ाकरा'' । (**अल्लाह** पाक हमें इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ दा'वते इस्लामी के दीनी कामों में अ़मली तौ़र पर हि़स्सा लेना नसीब फ़रमाए ।)

आ़शिक़े मदीना की इ़श्क़े मदीना से भरपूर एक बे मिसाल दुआ़

काश ! गुनाह बख़्शने वाला ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार, मुझ गुनहगार को अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मुआ़फ़ फ़रमा दे । ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक ! जब तक ज़िन्दा रहूं इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में गुम रहूं, ज़िक्रे मदीना करता रहूं, नेकी की दा'वत के लिये कोशां रहूं, मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाऊं और बे ह़िसाब बख़्शा जाऊं, जन्नतुल फ़िरदौस में प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो । आह ! काश ! हर वक़्त नज़्ज़ारए मह़बूब में गुम रहूं । ऐ **अल्लाह** पाक ! अपने ह़बीब पर बे शुमार दुरूदो सलाम भेज, इन की तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा । आमीन (मदनी वसिय्यत नामा, स. 10 ब तग़य्युरे क़लील)

या इलाही ! जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए दौलते बेदारे इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

(जारी है)

वाह क्या बात है मदीने की

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

जारी है.....

اَلْحَمْدُ لِلّٰه! अमीरे अहले सुन्नत के पहले सफ़रे मदीना की पहली क़िस्त मुकम्मल हुई, अगली क़िस्तें भी اِنْ شَآءَ اللّٰه मन्ज़रे आम पर आएंगी ❀ अमीरे अहले सुन्नत के मदीनए पाक में मा'मूलात ❀ अमीरे अहले सुन्नत की अपने पीरो मुर्शिद से पहली मुलाक़ात ❀ अमीरे अहले सुन्नत की हिकायाते मदीना ❀ अमीरे अहले सुन्नत की उलमाए किराम से यादगार मुलाक़ातें ❀ अमीरे अहले सुन्नत का पहला सफ़रे हज मअ़ मक्के से मदीने का सफ़र ❀ अमीरे अहले सुन्नत की मदीनए पाक से जुदाई.....

978-969-722-196-7
01082204

فیضان مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net